Research Scholar : Subhash Kumar Gautam
Supervisor: Professor Durga Prasad Gupt
Department: Hindi Department
Title: Bhoomandalikaran Ka Hindi Samachar-Patron Par Prabhav(Delhi Se Prakashit Pramukh Hindi Samachar Patron Ke Sandarbh Mein)

संक्षिप्त शोध सार

भूमंडलीकरण ने जहाँ एक ओर सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक क्षेत्र में असीम संभावनाएँ बढ़ाई हैं वहीं दूसरी ओर इसने समाज में असमानता को भी जन्म दिया है। आज इसके प्रभाव से कोई भी क्षेत्र अछूता नहीं है। संचार और सूचना क्रांति ने भूमंडलीकरण की प्रक्रिया को और भी आसान बना दिया है। भूमंडलीकरण से सबसे अधिक व्यावसायिक लाभ अगर किसी क्षेत्र को हुआ है तो वह है मीडिया और विज्ञापन एजेंसियाँ। भूमंडलीकरण के कारण समाचारपत्रों के प्रचार–प्रसार, विज्ञापन और सर्कुलेशन में इजाफ़ा हुआ है। 1991 से इसकी शुरुआत मानी जाती है।

भूमंडलीकरण और मुक्त अर्थव्यवस्था के इस दौर में कल्याणकारी राज्य की अवधारणा गौण हो गई है। विश्व भूमंडलीकृत बाज़ार में तब्दील हो गया है, जिसे विकसित देशों की राजनीतिक संस्थाएँ संचालित कर रही हैं। इससे मीडिया भी अछूता नहीं रहा वह भी व्यवसाय बन चुका है। मीडिया कारपोरेट जगत पर निर्भर हो गया है और उसी के हितों को आगे बढ़ा रहा है। नब्बे के दशक में देश के भीतर मीडिया में आमूल–चूल परिवर्तन देखने को मिला। सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक बदलाव के चलते पश्चिमी यूरोप और अमेरिका के उलट भारत में समाचारपत्रों के पाठकों की संख्या लगातार बढ़ी है। समाचार पत्रों के राजस्व के मॉडल में आए बदलाव के चलते परिशिष्टों की संख्या में इजाफ़ा हुआ और लेआउट भी आकर्षक हुआ। इस दौरान विदेशी निवेश को मंजूरी मिलने के साथ ही हिंदुस्तान' और 'नवभारत टाइम्स' जैसे बड़े मीडिया घरानों ने एक ही समाचारपत्र के अनेक क्षेत्रीय संस्करण शुरू किए।

सन् 2008 में बहुत तेजी से समाचारपत्रों के ऑनलाइन संस्करण शुरू हुए। समाचारपत्रों की दुनिया में यह बड़ा बदलाव है और तकनीक संपन्न समाचारपत्र ही इस क्षेत्र में टिक पाएँगे। इसे भूमंडलीकरण के प्रभाव के रूप में देखा जा सकता है। छोटे समाचारपत्रों के लिए यह ख़तरे का विषय भी है। पूंजीवादी व्यापार के तौर–तरीक़ों और लाभ कमाने की होड़ ने हिन्दी समाचारपत्रों को अपनी गिरफ़्त में ले लिया है। 1990 में समाचारपत्रों में वर्गीकरण की शुरुआत हुई। इससे पहले पाठकों और उपभोक्ताओं में कोई वर्गीकरण देखने को नहीं मिलता है। हर वर्ग की आय को केन्द्र में रखकर समाचारपत्रों का प्रकाशित होना भी एक तरह से भूमंडलीकरण की ही देन है। 1991 में भारत में आर्थिक उदारीकरण, निजीकरण और भूमंडलीकरण की नीतियों के साथ संचार क्रांति का आगमन भी हुआ।

'हिन्दुस्तान' 1991 में 12 पृष्ठों का ब्लैक एंड व्हाइट समाचारपत्र हुआ करता था। सप्ताह में रविवार के दिन 'रविवासरीय' प्रकाशित होता था। आज यह 24 पृष्ठों का रंगीन समाचारपत्र है। 'नवभारत टाइम्स' ने दिल्ली में पहली बार पूर्णकालिक संवाददाता रखने की परंपरा की शुरुआत की थी। 2002 में अटल बिहारी वाजपेयी सरकार ने प्रिंट मीडिया में विदेशी पूंजी निवेश के लिए जो दरवाज़े खोले उससे समाचारपत्र का चरित्र पूरी तरह से बदल गया। समाचारपत्रों में विदेशी पूंजी निवेश ने उनकी नैतिकता को भ्रष्ट किया और इसके माध्यम से साम्राज्यवादी ताक़तों का वर्चस्व बढ़ा है।

भूमंडलीकरण से पहले समाचारपत्रों पर ग़ौर करें तो प्रथम पेज पर ख़बरों की संख्या अधिक होती थी और उनमें विविधता देखने को मिलती थी। लेकिन वहीं भूमंडलीकरण के दौर के बाद प्रथम पृष्ठ पर प्रकाशित ख़बरों को देखा जाए तो समाचारपत्रों के पन्ने तो बढ़े हैं, समाचारपत्र भारी हुए हैं, पर ख़बरें उस मात्रा में नहीं हैं। जैसे–जैसे रेवेन्यू बढ़ा है, वैसे–वैसे यह समाचारपत्र भारी होते गए हैं और अन्तर्वस्तु हल्की होती गई है। समाचारपत्रों में सूचना के मामले में आज विश्वसनीयता का संकट है। इसकी विश्वसनीयता को बाज़ार ने प्रभावित किया है।

भूमंडलीकरण ने समाचारत्रों की अंतर्वस्तु को कमज़ोर और विज्ञापनों को ज़्यादा महत्त्वपूर्ण बना दिया है। समाचारपत्र सरोकार विहीन हुए हैं। हाशिए का समाज चाहे वह दलित, अल्पसंख्यक, किसान और स्त्री ही क्यों न हो, उनकी आवाज़ को दबा दिया जाता है। बाज़ारीकरण के चपेट में स्त्री सबसे पहले आती है। संपादक नामक संस्था उदारीकरण के बाद बेहद कमज़ोर हुई है। इसका मुख्य कारण समाचारपत्रों पर मैनेजिंग एडिटर (प्रबंध संपादक) का प्रभुत्व बढ़ जाना है।

भूमंडलीकरण ने जहाँ एक ओर समाचारपत्रों की विश्वसनीयता के लिए एक बड़ा संकट पैदा कर दिया है वहीं दूसरी ओर विज्ञापनों के चलते इसकी आर्थिक स्थिति भी मज़बूत हुई है। विचारणीय है कि भूमंडलीकरण के दौर में एक ही भाषा का वर्चस्व बढ़ा है यानी अंग्रेज़ी का। भूमंडलीकरण के आने से नया बाज़ार आया, नए उत्पाद आए और एक यंत्र की तरह समाचारपत्र काम करने लगे। इसी दौरान पेड न्यूज या भुकतानशुदा ख़बरों का चलन भी शुरू हुआ। इस तरह के समाचारों ने समाचारपत्र के कंटेंट को गहराई से प्रभावित किया।

उपरोक्त तमाम बातों के परिप्रेक्ष्य में यह स्पष्ट है कि भूमंडलीकरण का सबसे अधिक प्रभाव समाचारपत्र की प्रकृति पर पड़ा। एक तरफ़ इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों का डर सता रहा था, तो दूसरी तरफ़ भूमंडलीकरण और बाज़ारवाद अपना दबाव बनाने में लगा। इस तरह देखा जाए तो आज 'नवभारत टाइम्स' और अन्य समाचारपत्रों में अंग्रेज़ी के शब्दों का जो प्रयोग धड़ल्ले से बढ़ा है, वह ग्लोबलाइजेशन की ओट में अगर एक तरह का सांस्कृतिक विस्तार है तो हिन्दी भाषा के अंतर्गत इस विस्तार में एक सांस्कृतिक हमला भी नज़र आता है।